भारत सिक्खों का ऋणी ?

अगर सिक्ख ना होते तो हिंदुस्तान का क्या बनता ? क्या देश का नाम भारत होता ? क्या इस देश की पोलिटीकल और भुगौलिक सीमाएँ यही होती जो आज है ? अगर सिक्ख ना होते तो हिंदुस्तान या हिंदु संस्कृति का क्या होता ? क्या सिक्ख भारत के लिए हमेशा जरूरी है ? यह कुछ सवाल हैं जो इतिहास में दिलचस्पी रखने वालों के लिए रोचक हो सकते हैं।

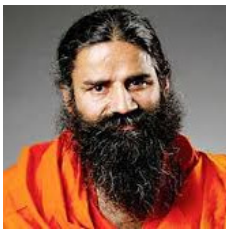

Baba Ram Dev

इन सवालों के बारे में गैर सिक्ख क्या सोचते हैं ? उन्हीं के जवाब में यहाँ संक्षेप में देता हूँ। एक प्रसिद्ध मुसलमान फिलासफर और कवि अला यार खान जोगी कहते हैं, कि अगर गुरू गोबिंद सिंह न होते तो हिंदुस्तान के सारे लोगों की सुन्नत हो जाती अर्थात सारा देश मुसलमान हो जाता। इन्हीं दिनों बाबा रामदेव जी की एक विडियो आई है। जिस में उन्होंने कहा है कि अगर सिक्ख ना होते तो भारतीय संस्कृति हिंदू संस्कृति, का नामो निशान मिट गया होता, यह समाप्त हो जाती।

अप्रैल 2014 में चपड़चिड़ी में बाबा बंदा सिंह बहादुर की यादगार के मुहुर्त्त के समय बड़ी गिनती में लीडर इकट्ठे हुए। उसमें उस समय के भाजपा प्रधान और वर्तमान के गृहमंत्री राजनाथ सिंह भी शामिल हुए और उन्होंने कहा कि अगर आज हिंदू धर्म अपने शुद्ध रूप में दिखाई देता है तो वह सिक्ख पंथ के कारण ही है। लीजंडरी सिक्ख कवि और विचारक भाई संतोख सिंह कहते हैं कि **अगर गुरु गोबिंद सिंह जी की पावन मूर्त्त न होती तो देश में देवी, देवताओं का नाम और वेद पुराणों की रीति मिट गई होती।** महान फिलासफर और शिक्षा शास्त्री, बनारस

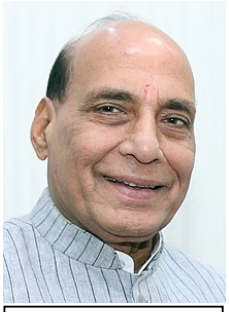

Rajnath Singh

हिंदू युनिर्वसिटी के फाउंडर पंडित मदन मोहन मालवीय कहते थे कि अगर हिंदू धर्म को जिंदा रखना है तो हर हिंदू परिवार अपने बड़े बेटे को सिक्ख बनाये।

M.M. Malviya

पिछले दिनों टी.वी. पर एक बहस (जो मुझे आखिर के दो मिनट ही सुनने को मिले) में एक सज्जन कह रहे थे कि जब तक गुरू ग्रंथ साहिब जी का वजूद (अस्तित्व) है और दुनिया में जहाँ–जहाँ उनका प्रकाश हो रहा है, तब तक वहाँ–वहाँ भारतीय संस्कृति जिंदा रहेगी। हाल ही में सुप्रीम कोर्ट में सिक्खों पर चुटकुलों के संबंध में एक जनहित याचिका पर सुनवाई के दौरान माननीय जज साहिब ने सिक्खों पर एक शानदार टिप्पणी की **"सिक्खों जैसा कोई नहीं ये देश का गौरव है।"** सपोक्समैन की एक खबर के अनुसार आर.एस.एस. के कौमी जनरल सेक्रेटरी सुरेश भईया जी जोशी ने 18 मार्च 2016 में जयपुर में अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा में भाषण देते हुये कहा कि ''गुरु गोबिंद सिंह पूरे भारत में राष्ट्रीय चेतना के उदाहरण हैं। उन्होंने भारतीय समाज से जड़ता और उदासीनता को खत्म किया, और वीरता और भक्ति की भावना भरी!''

केवल यहाँ ही बस नहीं, सारे इतिहासकार इस बात से सहमत हैं कि अगर सिक्ख ना होतो तो 18वीं या 19वीं सदी में ही जमुना तक का भारत का सारा इलाका इरान या अफगानिस्तान का हिस्सा बन गया होता (फिर पाकिस्तान नहीं होता)। अगर दिल्ली तक इरान औरया अफगानिस्तान का राज्य हो जाता तो बाकी बचा हुआ हिंदुस्तान एक बेहद शक्तिशाली और इरान से लेकर यमुनानदी तक बड़े मुस्लिम साम्राज्य का मुकाबला कितने समय तक कर सकता। यह दानिशमंदों के सोचने वाली बात है। जाहिर है जल्दी ही सारा देश इस्लामी झंडे के नीचे आ जाता। 1947 में मास्टर तारा सिंह ने, 1965 में दन्तकथा बने जनरल हरबख्श सिंह ने और 1971 में ब्रिगेडियर कुलदीप सिंह ने यमुना नदी तक का इलाका पाकिस्तान में जाने से बचा लिया।"

1947 में मुहम्मद अली जिन्नाह ने कहा था कि मास्टर तारा सिंह ने मेरा पाकिस्तान लंगडा कर दिया है। पाकिस्तान के मेजर जनरल मुकीम खान ने अपनी

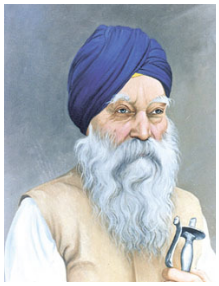

Master Tara Singh

किताब Crises of Leadership में 1971 की लड़ाई में लौंगोवाल के मुकाम पर हुई लड़ाई के बारे में लिखते हैं, कि थोड़े से सिक्खों ने हमारी महान विजय (दिल्ली में लंच) को एक बहुत बड़ी हार में बदल दिया। 1971 की पूरी लड़ाई के बारे वह फैसला देते हैं, "इस लड़ाई में हमारी हार का मुख्य कारण हमारे विरूद्ध लड़ रहे सिक्ख जवान थे। सिक्ख बहुत बहादुर हैं और उनके अंदर मरमिटने का जज्बा है।" किताब में एक जगह पर वह लिखते हैं कि पाकिस्तान ने भारत से सारी लड़ाईयां सिक्खों के कारण ही हारी। 1965 की लड़ाई के बारे में सबको पता है कि कैसे जनरल हरबख्स सिंह ने उस समय के आर्मी चीफ जनरल शंकर राय चौधरी के हुकमों को दरकनार कर पंजाब और काश्मीर को पाकिस्तान जाने से बचा लिया। सिक्खों ने जमुना नदी तक का इलाका बार–बार हिंदुस्तान के लिये बचाया है।

हम लोग 2½ हजार साल से हमलावरों से हारते रहे हैं। यह सिलसिला शुरू हुआ 520 ई.पू. में इरान के बादशाह डेरियस महान की भारत विजय के साथ और उसके बाद 326 ई. पू. में सिकंदर के हाथों पोरस की हार के साथ। इसके बाद चन्द्रगुप्त मौर्या कई कोशिशों के बाद भी जब सैल्यूकस निकेटर से सिकंदर द्वारा भारत के विजयी इलाके वापस न ले सका तो 303 ई. पू. में दोनों ने आपस में संधी कर ली। इसके बाद 312 ई. में एक 17 साल के लड़के मुहम्मद बिन कासिम ने सिंध के राजा दायिर को हराया।

इसके बाद 1000 ई. से शुरू होकर 1026 ई. तक मुहम्मद गजनी ने हिंदुस्तान पर 17 हमले किये। 1001 ई. में गजनी ने पेशावर के राजा जयपाल को हरा कर पेशावर जीत लिया। 16–17 हमलों की सफलता के बाद महमूद गजनी ने पंजाब को गजनी साम्राज्य में शामिल कर लिया पर वह स्वयं गजनी वापस चला गया। इसके बाद मुहम्मद गोरी ने 1175 ई. से 1205 ई. तक कई हमले किये। गौरी ने 1192 ई. में तराईन की दूसरी लड़ाई में पृथ्वी राज चौहान की अगुवाई में इकट्ठी हुई राजपूत शक्ति को ऐसी हार दी कि अगले 400–500

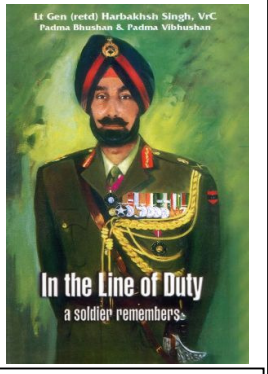

Gen. Harbaksh Singh

साल तक राजपूत सिर न उठा सके। गौरी की जीत के बाद तुर्कों ने पंजाब से लेकर बिहार–बंगाल तक के प्रदेशों पर कब्जा कर लिया। गौरी, चौहान से 14 साल बाद 1206 में खोखरों द्वारा कत्ल कर दिया गया। राजपूत शक्ति फिर राणा संग्राम सिंह (राणा साँगा) की अगुवाई में इकट्ठी हुई और इनकी टक्कर बाबर के साथ 1527 ई. में कनवाह (आगरा) के मैदान में हुई। बाबर ने दस घंटों में यह लड़ाई जीत ली। बाबर ने राजपूतों के सिरों की एक मिनार बनवाई। अनुमान लगाईये कि कितने हिंदुओं का कत्ल हुआ होगा। इस लड़ाई के बाद राजपूत शक्ति हमेशा के लिए खत्म हो गई। माता की तरफ से बाबर का संबंध मंगोल चंगेज खान के वंश से था, और पिता की तरफ से इसका संबंध तैमूरलंग के साथ था। 1519 ई. से 1529 ई. तक बाबर ने भारत पर पाँच हमले किए। इन हमलों ने भारत में मुगल राज्य की नींव रखी। गौरी और गजनी दोनों अफगानी थे। इसके बाद 1556 ई. में पानीपत की दूसरी लड़ाई में अकबर ने उत्तर के हिन्दू राजा हेम चंद्र विक्रमादित्य को हराया। ये एक र्निणायक जीत–हार थी क्योंकि इस लड़ाई के बाद अकबर की सफलताएँ शुरू हो गईं। इसके बाद नादरशाह, जिस को ईरान का नेपोलियन कहा जाता है, ने मार्च 1739 ई. में दिल्ली पर हमला किया। दिल्ली को तहस–नहस करके कत्लेआम का हुक्म दिया। दिल्ली वालों का जो कत्लेआम हुआ वह बहुत भयानक था। इसको भारत पर ईरान की र्निणायक जीत कहा जा सकताहै। ये लड़ाई ईरान के स्कूली किताबों में पढ़ाई जाती है। पर यही नादरशाह सिक्खों के गुरिल्ला हमलों से घबरा गया और लाहौर के सूबेदार जकरिया खान से सिक्खों के बारे में पूछा। सिक्खों की बहादुरी और प्रशंसा से अविभूत होकर नादरशाह बोला, ‘‘अब समय आ गया है कि सिक्ख देश पर राज्य करेंगे।’’

नादिर शाह की मृत्यु के बाद अहमद शाह अब्दाली अफगानिस्तान की गद्दी पर बैठा। इसने दुरानी राजवंश की नींव रखी। इसलिये इसको अहमद शाह दुरानी भी कहा जाता है। इसने भी हिंदुस्तान पर कई हमले किए। इसने 1761 ई. में पानीपत की तीसरी लड़ाई में सदाशिवराव बाहू पेशवा की अगुवाई में इकट्ठी हुई

मराठा शक्ति को निर्णायक हार दी। मराठा शक्ति की इस हार को अंग्रेजी में a colossal defeat unprecedented in the Indian history कहा जाता है इस हार के बाद मराठा शक्ति हमेशा के लिए खत्म हो गई। यह है देश का पिछले ढाई हजार साल को इतिहास।

S. Hari Singh Nalwa

हमलावरों ने हमलों के दौरान लाखों हिन्दूओं का कत्ल किया। लाखों बंदी बनाये। औरतों की बेइज्जती की गई और गजनी के बाजारों में बेचा गया। लाखों मंदिर गिराए गए। देवी देवताओं की लाखों मूर्तियों को तोड़ा गया और पैरों के नीचे कुचला गया। लाखों मन सोना, हीरे–जवाहरात, चांदी आदि लूट कर हमलावर अपने साथ ले गए। अगर अलग–अलग किताबों में अलग–अलग हमलों में हिन्दुओं के कत्लों की गणना करें तो शरीर काँप जाता है। जलील करने के लिए "हिंदू" नाम दे दिया गया। हम लोग आर्यों से हिन्दू बन गए।

अब सवाल उठता है कि उल्टी गंगा किसने बहाई। हवाओं के रूख को किसने मोड़ा? इतिहास को उल्टा चक्र किसने दिया? इन सारे सवालों का एक ही जवाब है, सिक्खों ने। जो अफगानी हम लोगों को सैंकड़ों सालों (1001 से 1798) तक पैरों के नीचे रौंदते रहे, हमने उनको 1823 में नौशहिरा की, 1827 में सैदो की और 1831 में बालाकोट की लड़ाई में निर्णायक हार दी। 1834 में जनरल हरी सिंह नलवा ने अफगानियों से पेशावर (जो 1001 में महमूद गजनी ने हमसे छीन लिया था) को आजाद करवा लिया। आज पेशावर पाकिस्तान के पास सिक्खों के कारण ही है। अगर सिक्ख 1834 में पेशावर न जीतते तो आज पेशावर अफगानिस्तान का हिस्सा होता। अब हालात यह थं कि जिन अफगानियों से हिन्दुस्तानी काँप जाते थे, अब वही अफगानी सिक्खों के नाम से काँपने लगे। सरदार हरी सिंह नलवा खौफ का प्रायवाची बन गया। "हरिया रागले दा" सुन कर बच्चे जिद्द करना छोड़ देते थे, गर्भवती औरतों के गर्भ गिर जाते थे, जवान गश खाकर गिर पड़ते थे। **"जीत के प्रतीक"** का तमगा अब अफगानिस्तानीयों से हटकर सिक्खों के पास आ गया था। मुसलमानों में एक बात प्रचलित थी कि

देवी–देवताओं को मानने वाले लोग एक रब्ब को मानने वालों के सामने नहीं ठहर सकते। भारत के इतिहास और इस्लाम के इतिहास ने यह बात बिल्कुल सही साबित कर दी थी। मुसलमान हिंदुओं की तरह सिक्खों की भी काफिर कहते और समझते हैं। पर सिक्खों की लगातार जीतों के बाद मुगलों और अफगानों ने यह कहना शुरू कर दिया, कि नहीं खालसा भी एक खुदा को मानने वाला है। यह कितनी गर्व की बात है कि जिस देश में संसार की दो सुपरपावर अमरीका और रूस फेल हो गए उस देश को सरदार हरी सिंह नलवा ने काबू कर लिया। पीछे खबर आई थी कि अमरीका के प्रेजीडेंट बराक ओबामा ने ऐसी सखसियत में दिलचस्पी दिखाई है और उसके बारे में जानकारी हासिल करने की कोशिश की है।

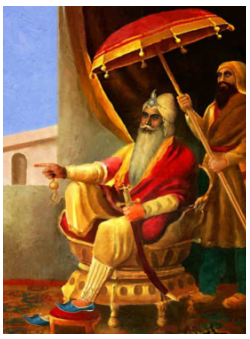
Maharaja Ranjit Singh

कश्मीर तो महाराजा रणजीत सिंह ने 1819 में ही अफगानों से आजाद करवा लिया था। उस समय हिन्दूयों में यह बात प्रचलित थी कि मुसलमानों की ओर से हिन्दुयों के ऊपर हुए जुल्मों का बदला लेने के लिए भगवान ने महाराजा रणजीत सिंह को भेजा है। जो कश्मीर आज भारत और पाकिस्तान के पास है, वह सिक्खों के कारण ही है। अगर सिक्ख पेशावर की तरह काश्मीर भी जीत कर सिक्ख राज्य का हिस्सा न बनाते तो आज कश्मीर भी अफगानिस्तान का हिस्सा होता और भारत की सीमा जम्मू से शुरू होती।

Air Commodor Baba Mehar Singh

सिक्खों ने कश्मीर को हिन्दुस्तान के लिए कई बार बचाया। 'कश्मीर के रखवाले' की उपाधि भारत सरकार की तरफ से सिक्ख पलटन को ही मिली है और लद्धाख के रखवाले की उपाधि ऐयरकोमोडोर बाबा मेहर सिंह को मिली। 20 जून 2008 को लेह एयरपोर्ट पर बाबा मेहर का एक छोटा बुत (bust) लगाया गया जिसका नाम है ''लद्धाख का रखवाला''। पिछले दिनों में एक विड़ियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ। 2015 में गणतंत्र दिवस के मौके पर बी.डी. बिरला

सभागार में दैनिक नवज्योति बैनर के नीचे राष्ट्रीय कवि सम्मेलन हुआ। उसमें एक गैर पंजाबी हिंदू कवि ने अपनी कविता में कश्मीर समस्या का बड़ा भावुक जिक्र करते हुए दो बातें कहीं। **"हम कर्जा खाये बैठे हैं गुरू गोबिन्द के बलिदानों का"** और दूसरा, **''अगर हम गुरू के बाजों (सिक्खों) को छोड़ देते (1948 में) तो लाहौर कराची को दिल्ली से जोड़ देते।''** इसके बाद आजादी दौरान सिक्खों की कुर्बानियों का और छोटे साहबजादों की शहीदी का वर्णन इसी कविता में सुनकर श्रोताओं की आँखों में आँसू आ गये। एक और विडियो में एक नौजवान गैर पंजाबी हिंदू कवि अपनी कविता में "मैं सिक्ख वीरता के नायकों की याद दिलाता हूँ " में सारागढ़ी की वीरता का जिक्र करता है और कहता है कि "यूनेसको की किताबों में यह लड़ाई पढ़ाई जाती हैं पर भारत का बच्चा इस लड़ाई से अंजान रह जाता है।"

Shri Guru Tegh Bahadar Ji

1948 में सीजफायर न किया जाता तो लेफ. ज. कुलवंत सिंह की कमान के नीचे पटियाले की सिक्ख पलटन और आर्मी की सिक्ख फौजों ने कुछ घंटों में ही कश्मीर को आजाद कर लेना था।

17वीं सदी में जब देश में घोर निराशा छाई थी। और कोई सहारा नजर नहीं आ रहा था तो 500 कश्मीरी पंडित, पंडित कृपा राम की अगुवाई में सारी हिंदू कौम के प्रतिनिधि के रूप में आन्नदपुर साहिब में गुरू तेग बहादुर जी के दरबार में 1675 ई. में हाजिर हुए और अपना धर्म बचाने की गुहार लगाई। गुरू तेग बहादुर जी ने अपनी जान न्योछावर करके भारतीय (हिंदू) संस्कृति को बचा लिया। यह बलिदान मानव इतिहास का एक महान आश्चर्य था। 300 साल बाद एक बार फिर कश्मीरी पंडितों की जान पर बन आई जब उनको घर से बेघर कर दिया गया। काफी समय से वे कई शहरों में कैम्प में रह रहे हैं। देश की कोई भी सरकार उनकी मदद नहीं कर सकी। हर तरफ से हार के वो फिर 16 अप्रैल

1995 को गुरू तेग बहादर जी की शरण में आये। लगभग 1200 कश्मीरी पंडितों ने गुरूद्वारा सीसगंज, दिल्ली और आनन्दपुर साहिब में हाजिर हो कर पटीशन दायर की। पटीशन बड़ी दिल को छूने वाली थी।

Baba Banda Singh Bahadar

"ओ भारतीय संस्कृति के सिरमौर! हम तुम्हारे चरणों में श्रद्धा के फूल भेंट करते हैं। आपने अपने युगांतकारी बलिदान से इतिहास लिखा है। एक बार फिर हम विनाश के कगार पर खड़े हैं। भारतीय राष्ट्र की डरपोक राजनीति से सहारा लेकर फिरकाप्रस्त ताकतों ने हम लोगों को जबरदस्ती जलावतन कर दिया है। हे दैवी अवतार! राष्ट्र की सोई हुई आत्मा को जगाओ।" यह बात अलग है कि इस महान घटना का सही जवाब देकर हम नाम नहीं कमा सके, न हम अपना कद ऊँचा कर सके।

भारतीय इतिहास में विजय की नींव तो हमने छठे गुरू साहिब के समय ही रख दी थी, जब गुरू हरगोबिंद सिंह जी ने 1629 ई. से 1634 ई. तक चार लड़ाईयों में शाही फौजों को हार दी। तराइन (दिल्ली) की पहली लड़ाई (1191 ई.) जिसमें पृथ्वीराज चौहान ने मुहम्मद गौरी को हराया था के बाद 500 सालों में यह हिन्दुस्तानियों की पहली जीत थी। आज जिस अखंड भारत की बात कही जाती है, उसके मूल स्त्रोत तो गुरू नानक जी हैं। तिब्बत से लंका तक, पेशावर से आसाम/बरमा तक के सारे इलाके को गुरू नानक ने एक राजनीतिक और भूगौलिक यूनिट की कल्पना करके इसको 'हिन्दुस्तान' नाम दिया। हिंदुस्तान शब्द पहली बार गुरू नानक ने प्रयोग किया जो गुरू ग्रंथ साहिब में आया इससे पहले यह शब्द भारत के किसी भी ग्रन्थ में नहीं मिलता।

अखंड भारत का सपना लेने वालों को गुरू नानक देव को अपना ईष्ट मानना चाहिए। गुरू नानक देव जी ने भारत के सदियों के इतिहास में पहली बार भारतीयों की सोई हुई अणरव और आत्मा को जगाया। ''जे जीवै पत लथी जाये।। सब हराम जेता किछ खाय।।'' जब अहमद शाह अब्दाली पानीपत की तीसरी लड़ाई

(1761 ई.) में मराठा शक्ति को तहस–नहस करके लूट के मार में साथ कई हजार लड़कियों को साथ ले जा रहा था तो ब्यास नदी के किनारे गोइंदवाल साहिब के पास सरदार जस्सा सिंह आहलूवालिया की अगुवाई में सिक्खों ने ही अब्दाली द्वारा लुटे हुए माल और हथियारों के साथ–साथ 2200 भारतीय लड़कियों को भी छुड़ाया और बाद में उन्हें महाराष्ट्र में उनके घरों में पहुँचा दिया। 1708 ई. में गुरू गोबिन्द सिंह जी शरीर त्यागते हैं तो 1710 ई. में ही सिक्खों ने बाबा बंदा सिंह बहादुर की अगुवाई में मुगल राज्य के सबसे मजबूत गढ़ सरहिंद की ईंट से ईंट बजादी और सतलुज से लेकर जमना तक खालसा राज्य कायम कर लिया। यह पहला सिक्ख राज्य भारत के सदियों के इतिहास में हिंदुस्तानियों का पहला स्वतंत्र राज्य था। यह तो हमारी फूट थी जिसने हमारे बढ़ते कदम रोक लिये नहीं तो

Gen. J. S. Aurora

सिक्ख राज्य तभी कायम हो जाना था। वह भी सारे भारत के ऊपर जिसकी राजधानी दिल्ली होती। अंग्रेजों से पहले सिक्खों ने मिसलों के झंडे के नीचे 1765 ई. से 1783 तक कई बार दिल्ली को पैरों तले रौंधा और पंजाब का एक बहुत बड़ा हिस्सा अपने कब्जे में कर लिया और अगले कुछ सालों में महाराजा रणजीत सिंह की कमान के नीचे एशिया का सब से शक्तिशाली राज्य कायम कर लिया। भारत के इतिहास के वह पन्ने सिक्खों की दरियादिली और सूरवीरता की मूँह बोलती तस्वीरें हैं, जब हिंदू अपनी बहु–बेटीयों को मुस्लिम हाकमों के हाथों अपहरण हो जाने के बाद जंगलों में सिक्खों के पास फरियाद करते तो सिक्ख रात या दिन के 12 बजे हमला करके मुगल हाकिमों के पास से उन लड़कियों को छुड़ाकर माँ–बाप के हवाले कर देते थे।

सिक्खों ने ही भारत के इतिहास को संसार के कई महान इतिहासों के मुकाबले पर खड़ा किया है। समस्त देश के इतिहास में दो ही ऐसे जरनैल हुऐ हैं जिन्होंने बार्डर पार करके दुश्मन को मार मारी है। एक था जनरल हरी सिंह नलवा, जिसने सिंध पार करके 833 साल बाद पेशावर अफगानियों से आजाद करवाया

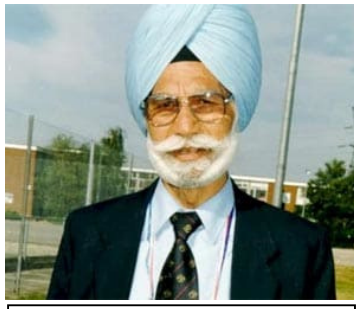

S. Balbir Singh [Senior]

और दूसरा जनरल जगजीत सिंह अरोड़ा जिसने देश का बार्डर पार करके ढाका में दुश्मन को घुटने टेकने पर दिया। जनरल नियाजी का जनरल अरोड़ा के सामने समर्पण की तस्वीर भारतीय आर्मी आरकाइव की सबसे ज्यादा गैरवशाली तस्वीर है। संसार की दस महान लड़ाइयाँ और पाँच महान असंतुलित और असमानता वाली लड़ाईयों में दो लड़ाईयाँ सिक्खों ने ही लड़ी थीं। पहली चमकौर साहिब की लड़ाई और दूसरी सारागढ़ी की लड़ाई। संसार के महान दस जरनैलों में भारत का एक ही जरनैल हरी सिंह नलवा है। सारे संसार के पिछले 100 सालों में सारे खेलों के 16 महान ओलम्पिकों में भारत का एक ही खिलाड़ी स. बलबीर सिंह (सीनीयर) है। **अगर सिक्ख न होते तो देश के इतिहास ने ना कोई बार्डर पार करने वाला जरनैल पैदा किया होता और न बहादुरी की कोई लड़ाई लड़ी होती और न ही हम संसार के महान जरनैलों में शामिल होते और न ही संसार के महान ओलम्पियनों में।**

अगर डाक्टर मनमोहन सिंह ना होते तो 1991 में भरत के माथे दिवालियापन का धब्बा लग जाना था। डा. मनमोहन सिंह ही भारत के पहले ऐसे प्रधानमंत्री हैं, जिनको सारी दुनिया ने अपना लीडर माना और आलमी आर्थिक मंदी के समय उनसे अगुवाई माँगी। भारत को यह मान डा. सिंह ने ही दिलवाया कि सुपरपावर (प्रेजीडेंट बाराक ओबामा) ने भारत के किसी प्रधानमंत्री के बारे में कहा हो कि **"जब डा. मनमोहन सिंह बोलते हैं तो दुनिया सुनती है।"** जरा सोचो अगर मिल्खा सिंह 1958 की कामनवेल्थ खेलों में और इसी साल एशियन गेम्स में साने के तगमे न जीतता तो हिंदुस्तानी ऐथलेटिक्स का क्या हाल होता? क्या ऐथलेटिक्स में गौरव करने वाली कोई बात हमारे पास होती? 1962 एशिया गेम्स में मिल्खा सिंह ने दुबारा दो गोल्ड मैडल जीते। इस तरह एक नहीं पाँच–पाँच गोल्ड मैडल इस लिजंडरी दौड़ाक ने देश की झोली में डाले। कामनवेल्थ गेम्स में गोल्ड मैडल जीतना देश के खेलों के इतिहास का कितना बड़ा सुनहरी पल था। यह इस बात से पता लगता है कि इंगलैंड में भारत की उस समय की राजदूत विजयलक्ष्मी पंडित मैदान

Dr. Manmohan Singh

में मिल्खा सिंह को बधाई देने आई और साथ ही उसने मिल्खा सिंह की प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू के साथ टेलीफोन पर बात करवाई। नेहरू ने मिल्खा सिंह से कहा, "बताओ क्या चाहते हो।" यह ऐथलेटिक्स में भारत का पहला गोल्ड मैडल था जिस पर भारत सरकार और देश फूला नहीं समा रहा था। मिल्खा सिंह के कहने पर दूसरे दिन इस खुशी को मनाने के लिए सारे भारत में छुट्टी कर दी।

हर भारतीय को सिक्खों की महान प्राप्तियों को अपनी विरासत समझना चाहिए। इसके लिए उनके दिल में कोई हीन भावना नहीं आनी चाहिए। सिक्खों की प्राप्तियों से देश का सिर संसार में गर्व के साथ ऊँचा उठता है। सिक्ख इस देश के हैं आपके हैं। सिक्खों को यदि भारत के इतिहास से अलग कर दिया जाए तो भारतीय इतिहास में शायद गौरवपूर्ण कुछ भी नहीं रह जाता। सिक्ख दूसरे देशों में आर्मी चीफ, डिफेंट मिनिस्टर राजधानियों के पुलिस कमिश्नर, सुप्रीम कोर्ट में जज, मेयर, डिप्लोमेटों आदि पदों पर सुशोभित हो रहे हैं। इस के साथ भारत का सिर ऊँचा होता है। काश सिक्खों को भी यह बात समझ में आ जाये और वह भी हिंदुस्तान को अपनी गौरव गाथा सुनाये।

S. Milkha Singh

प्रितपाल सिंह तुली

दूरभाषः 7986137713

-0-0-